https://universitynews.in/

Total No. of Pages: 02

[Total No. of Questions: 06]

3453

B.A. (Part-II) Examination, 2022
हिन्दी साहित्य
प्रथम प्रश्न-पत्र
(For Non Collegiate Student Only)
(रीतिकालीन काव्य)

Duration of Examination: 1½ Hrs.
परीक्षा की अवधि: 1½ घण्टा

Max. Marks: 50
पूर्णांक: 50

Instructions to the Candidates:
परीक्षार्थी के लिए निर्देश:-

परीक्षार्थीगण सम्पूर्ण प्रश्नपत्रों में से 50 प्रतिशत अंक के प्रश्नों के उत्तर देवें। परीक्षार्थी द्वारा किन्हीं कारणों से 50 प्रतिशत अंकों से ज्यादा उत्तर देने की स्थिति में परीक्षक द्वारा उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन 50 प्रतिशत अंकों से ही किया जायेगा।

1- निम्न काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :-

(क) भौंरिनौ ज्यों भ्रमत रहति बनबीथिकानि
हंसिनी ज्यो मृदुल मृनालिका चहति है।
हरिनी ज्यों हेरति न केसरी के काननहिं,
केका सुनि ब्यालि ज्यों बिलान ही कहति है।
पीउपीउ रटति रहति चित चातकी ज्यों
चंद चितै चकई ज्यों चुप है रहति है।
सुनहु नृपति राम बिरह तिहारे ऐसी,
सूरतिन सीताजू की मूरति गहती हे।। (8)

अथवा

दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत मिलि मावस रबि-चंदु।।
करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौ न दीनदयाल।
दुखी होहुंगे सरल हिय बसत त्रिशंगी लाल।।
नहिं पावस, ऋतुराज यह, तजि, तरवर, चित भूल।
अपतु भएँ बिनु पाइहै क्यौं नव दल, फल, फूल।।

(ख) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै। (8)
हँसि बोलनि मैं छवि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग-अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै घर च्वै।

अथवा

दीरघ प्रचंड महापीन भुजदंड जुग सुंदर बिराजत फनिंद तै अति है।
लोचन बिसाल, राज दीपति दिपति भाल, मूरति उदार कौं लजनौ रति पति है।
चापहिं चढ़ाइबे कौं चल्यौ जुवराज राम, सेनापति मत्त गजराज कैसी गति है।
बिन कहे, दूर तैं बिलोकत ही जानी जाति, बीस बिसे दसौ दिगपाल कौं पति है।

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

(ग) कबि कहै करन करनजित कमनैत अरिन के उरन में कीनौ इमिछेउ है।
कहत धरेस धरा धरिबे कौं सेस ऐसो और धराधरनि कौ मेट्यो अहमेउ है।''
भूषन भनत महाराज सिवराज तेरौ राजकाज देखि कोऊ पावत न भेउ हे।
कहरि अैदिल मौजलहरी कुतुब कहै बहुरी निजाम के जितैया कहैं देउ है।। (8)

अथवा

मोरपखा मतिराम किरीट मैं, कण्ठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुण्डल डोलनि में छवि छाई।
लोषन लोल बिसाल विलोकनि, को न बिलोकि भयी बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं, मीठी लगै अंखियानि लुनाई।

2. केशवदास कठिन काव्य के प्रेत हैं। ''इस कथन की युक्ति युक्त विवेचना कीजिये। (16)

अथवा

''बिहारी अपने समय के सिरमौर कवि थे'' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये।

3. ''देव के काव्य में लाक्षणिकता और व्यंग्यात्मकता का अपूर्व संयोग हुआ है'' इस कथन को सप्रमाण सिद्ध कीजिये। (16)

अथवा

सेनापति के ऋतु-वर्णन की विशेषताओं पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिये।

4. ''मतिराम का काव्य रसस्निग्ध और प्रसाद पूर्ण भाषा का अनुपम उदाहरण है'' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। (16)

अथवा

भूषण के काव्य में वर्णित राजनैतिक चेतना और उसके प्रभाव का वर्णन कीजिये।

5. रीति काव्यशास्त्र के आधार पर नायक के प्रमुख भेदों को स्पष्ट कीजिये। (16)

अथवा

अलंकार सम्प्रदाय और उसकी परम्परा पर सारगर्भित लेख लिखिये।

6. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य धारा में अंतर स्पष्ट कीजिये। (12)

अथवा

रीतिकाल की परिस्थितियों का वर्णन कीजिये।

* * * * *

https://universitynews.in/